Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 29/April/2025 **IJRAW:** 2025; 4(6):111-114 **Accepted:** 13/June/2025

भोजपुरी और असमीया के लोकगीतों का वर्गीकरण विशेषत: 'पूर्वोत्तर भारत' के संदर्भ में

***[1]डॉ. जीतू कुमार गुप्ता**

*[1]पी.एच.डी., हिंदी विभाग, असम विश्वविद्यालय, असम, भारत।

सारांश

लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक साहित्य 'लोक' और 'साहित्य' दो शब्दों के मेल से बना है। जिसका अर्थ है- जन सामान्य द्वारा जन सामान्य के लिए रचित, जन सामान्य के बीच प्रचलित साहित्य। लोक साहित्य मौखिक होता है, जिसे लिपिबद्ध नहीं किया जा सकता है। लोक साहित्य का प्रमुख श्रेणी है- 'लोकगीत'। भोजपुरी और असमीया साहित्य एवं संस्कृति अपने आप में काफी व्यापक एवं समृद्ध है। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ ही मानव जाति अपनी भावों की अभिव्यक्ति विभिन्न रुपों से व्यक्त करते आ रहे हैं। जिसमें उनके भाव, हर्ष-विषाद, सुख-दुख, प्रेम-घृणा, पीड़ा-वेदना आदि प्रमुख है। लोक साहित्य का जन्म साधारण जन समुदाय के बीच होता है। समयानुसार पीढ़ी दर पीढ़ी आम जनता द्वारा मौखिक गीत एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे तक संशोधित, परिष्कृत होते हुए जब साहित्य में प्रवेश करती है, वहीं बाद में लोक साहित्य के श्रेणी में अपना स्थान बना लेती है। इस प्रकार लोक साहित्य क्रमश: आगे बढ़ता चला जाता है। और वही लोकगीत के रुप में एक अंग बन जाती है। पूर्वोत्तर भारत नाना जाति-धर्म, सम्प्रदाय की जन्मभूमि रही है। भोजपुरी और असमीया में विभिन्न प्रकार के लोकगीत देखने को मिल जाते हैं। भोजपुरी में जहाँ संस्कारपरक गीत, ऋतुगीत, श्रमगीत, जातिगीत, अन्य गीत आदि का वर्गीकरण किया गया हैं, वहीं असमीया में अनुष्ठानमूलक गीत, कर्मविषयक गीत, आख्यानमूलक, जूना आदि गीतों का वर्गीकरण किया गया है। भोजपुरी और असमीया के वर्गीकरण में व्यक्त लोकजन-जीवन तथा दोनों के आपसी संबंध, समानताएँ-असमांताएँ एवं विशेषताओं को इन लोकगीतों के देखने का प्रयास करेंगे। पूर्वोत्तर भारत के लोग स्वतंत्रता के उपरान्त अपनी जाति, भाषा और संस्कृति के प्रति बहुत जागृत हुए है। हालही के कुछ दशकों से भोजपुरी और असमीया लोकगीतों में भारी कमी देखने को मिल रही है, जिसका मुख्य कारण नई पीढ़ी का अपने नयी संस्कृति के प्रति झुकाव है।

मुख्य शब्द: लोक, संस्कार, कर्मविषयक, ऋतु, जूना, श्रम, अनुष्ठानमूलक, आख्यानमूलक आदि।

प्रस्तावना

लोकगीतों अपने निहित मिठास, छंद के स्थानों पर इसके लय में अद्भूत मिठास और संवेदना से भरा होता है। लोकगीत समाज की धरोहर ही नहीं लोकजीवन का दर्पण भी है। भोजपुरी और असमीया के लोकगीतों के वर्गीकरण के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति समाज और अपने धरोहर को बचाना, साथ ही भारतीय संस्कृति पर जो पाश्चात्य सभ्यता का आवरण चढ़ा है उसे हटा कर अपनी जन्मभूमि के लोकगीतों के महत्व को बताते हुए आम जनजीवन तथा लोकजीवन के महत्व को दिखाना है। वर्त्तमान समय में विभिन्न विश्वविद्यालयों में असमीया और हिन्दी (भोजपुरी) से संबंधित लोकसाहित्य और लोकगीतों पर संगोष्ठी, कार्यशाला का आयोजन भी किया जा रहा है। वस्तुत: वर्त्तमान समय भोजपुरी और असमीया लोकधुनों पर आधारित अनेकों गीत फिल्मों में देखने को मिल जाते हैं।

विस्तार: भोजपुरी लोक साहित्य में लोकगीतों का अपना एक अलग ही महत्व है, किसी भी जाति के लोक साहित्य का मेरुदण्ड़ लोकगीत को ही मान सकते हैं। बिना लोकगीतों के लोक साहित्य अछुता रह जाता है। जिसमें अज्ञात कवि हो या प्रसिद्ध कवि अपनी धुनों और कण्ठों की आवाज से लोकगीत को एक मुकाम तक पहुँचाने में अपना विशेष योगदान होता हैं। लोकगीतों का वर्गीकरण विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से किया है। लोकगीतों का वर्गीकरण करते समय विद्वानों ने विषय वस्तु के आधार पर लोकगीतों का वर्गीकरण किया है

लोक–मानव के प्रत्येक मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वासों, लोक धारणाओं में लोकगीत का विशेष योगदान रहता है। जिसके कारण हमें जन्म, मृत्यु, रीति-रिवाज, व्रत, त्यौहार, सामाजिक प्रथाओं और परम्पराओं में लोकगीत प्राप्त होते हैं। वस्तुत: भोजपुरी लोकगीतों का उद्भव आचानक से नहीं हुआ है। धार्मिक त्यौहारों, उत्सव और ऋतुओं जैसे विविध विषयों के भीतर उसके निहीत आवाज, उसकी गहराई तथा भाव के विस्तार के लिए लोकगीत का प्रादुर्भाव हुआ।

***Corresponding Author:** डॉ. जीतू कुमार गुप्ता

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकगीतों के वर्गीकरण को एक वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, जो इस प्रकार है [1]:-

i). संस्कार सम्बन्धी गीत।
ii). ऋतु सम्बन्धी गीत।
iii). व्रत सम्बन्धी गीत।
iv). जाति सम्बन्धी गीत।
v). श्रमगीत।
vi). देवी-देवताओं के गीत।
vii). विविध गीत।

विभिन्न विद्वानों द्वारा की गयी भोजपुरी लोकगीतों के वर्गीकरण और विभाजन में से कृष्णदेव उपाध्याय का वर्गीकरण को सटिक रुप से माना जा सकता है। कुल मिलाकर देखा जाये तो भोजपुरी लोकगीतों को हम छ: भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

i). संस्कार गीत: सोहर, मुण्ड़न, उपनयन, यज्ञोपवीत, विवाह, मृत्यु आदि।
ii). ऋतुगीत: कजरी, झूला, होली, लावनी, चैता, बारहमासा आदि।
iii). श्रमगीत: रोपनी, कटनी, सोहनी, कोल्हू, चरखा, जॅतसार आदि।
iv). जातिगीत: कहारों, अहीरों, चमारों, दुसाधों, धोबियों और गोड़ों के गीत अदि।
v). भक्तिगीत: देवीगीत, नागपंचमी, यात्रागीत, गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, तीज, छठीमाता, जिउतिया, जन्माष्टमी, व्रतगीत आदि।
vi). अन्य गीत: विरह, झूमर, विरह, दादरा, मेले के गीत, खेल के गीत, पालने के गीत आदि।

1. संस्कार गीत

भारतीय जीवन संस्कृति विभिन्न संस्कारों से परिपूर्ण है। भारतीय धर्म शास्त्रियों ने सनातन धर्म में कुल सोलह प्रकार के संस्कारों का वर्णन किया है। जन्म से मृत्यु तक के जीवन चक्र में यह संस्कार हमें देखने को मिल जाते है। तथा इन सोलह संस्कारों में गीत भी हमें बहुतायत मात्रा में देखते सुनते हैं। सोलह संस्कार इस प्रकार हैं:-

i). गर्भाधान संस्कार
ii). पुंसवन संस्कार
iii). सीमन्तोन्नयन संस्कार
iv). जातकर्म संस्कार
v). नामकरण संस्कार
vi). निष्क्रमण संस्कार
vii). अन्नप्राशन संस्कार
viii). मुंड़न संस्कार
ix). विद्यारम्भ संस्कार
x). कर्णविध संस्कार
xi). यज्ञोपवीत संस्कार
xii). वेदारम्भ संस्कार
xiii). केशानत संस्कार
xiv). समावर्तन संस्कार
xv). विवाह संस्कार
xvi). अन्त्येष्टि संस्कार।

उपरोक्त विवेचन के पश्चात हम कह सकते हैं कि जन्म से लेकर मरण तक अनेक संस्कारों की परम्परा भारतीय संस्कृति में रही है, किंतु मूल रुप से सोलह संस्कारों को ही भारतीय परम्परा में स्थान प्राप्त है।
सोहर के गीत का एक उदाहरण:-

"आपना के राजा हाथी करु अवरु घोड़ा करु रे।
ऐ राजा, हमारा लाल ओहार चढि हम जाइवि रे।" [2]

2. ऋतुगीत

भोजपुरी लोकगीतों में ऋतु संबंधी लोकगीत बहुतायत मात्रा में पाये जाते हैं। भारतीय संस्कृति में प्रकृति, ऋतु आदि से संबंधित गीत, पर्व अधिक मनाये जाते हैं। भारतीय परम्परा में छ: ऋतुएं हैं। जो इस प्रकार हैं:- वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर। विभिन्न ऋतुओं में ऋतु के ध्यान में रखते हुए भिन्न-भिन्न गीतों को राग, लय और ताल के साथ लोकगीत गातें बजाते है। लोकगीतों में कजरी, चैता, होली, बारहमासा, फाग, हिंड़ोला आदि गीत गाया जाता है।
ऋतुगीत चैता का एक उदाहरण:-

"चैत बीति जयतइ हो रामा।
तब पिया की करे अयतइ।
आरे अमुवा मोजर गेल,
फरि गेल टिकोरवा,
ढारे-पाते भेल मतवलवा हो रामा
चैत बीति जयतइ हो रामा।" [3]

3. श्रमगीत

भारत ही नहीं पूरी मानव सभ्यता में श्रम को बहुत महत्व दिया गया है। श्रम के बिना मानव समाज का विकास सम्भव नहीं है। तथा भोजपुरी लोकगीतों में भी श्रम के गीत हमें देखने को मिल जाते हैं। जिससे श्रम में होने वाले थकान को कम किया जा सके। श्रम के गीत कुछ इस प्रकार हैं:- रोपनी, कटनी, सोहनी, कोल्हू, चरखा, जॅतसार आदि। शांति जैन भी श्रम की परिभाषित करते हुए लिखते हैं – "कोई काम करते समय थकावट मिटाने के लिए जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें श्रमगीत कहते हैं।" [4]
जॅतसार के गीत का एक उदाहरण-

"तू केकरि कमाई खईबू हो राम ए राम
धइ लेहलीं गोड़िन के भेसवा,
त पतई बुहारे आ गइली हो राम।
ए राम तिरिया चलि जइतू नइहरवाँ,
त सब कुलवा रहि जइते हो राम।" [5]

4. भक्तिगीत

हिन्दू परम्परा में पर्वो और धार्मिक उत्सवों का विशेष महत्व है। हमारे भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों की तुलना में भोजपुरी प्रदेशों में व्रत, उत्सव और त्यौहारों की विशेषता अधिक रही है और यहाँ का जीवन इसी धर्म और भक्ति की नींव पर खड़ी है। भक्तिपरक लोकगीतों में मुख्य रुप से महाशिवरात्री, गणेश चतुर्थी, दीपावली, छठ पूजा, शीतला पूजा, दुर्गा पूजा, देवीगीत, नागपंचमी, जन्माष्टमी, तीज आदि के लोकगीत देखने को मिलते हैं।
शीतला माता के गीत का उदाहरण:-

"कवना बरन तोरा घोड़ा ए शीतलि,
कवना बरन असवार,
बंगालिन देवी हो, लीही न पुजनवा हमार।" [6]

5. अन्य गीत

अन्य गीतों में ऐसे गीत आते हैं, जिनका कोई निश्चित शीर्षक नहीं होता है। और न ही उपरोक्त किसी लोकगीतों के श्रेणी में उसे रख सकते हैं। भोजपुरी लोकगीतों में ऐसे अनेकों को गीत मिल जाते हैं। इन गीतों में झूमर, श्रृंगार, खेमटा, खेल के गीत, दादरा, विरह, चनैनी आदि जैसे गीतों को इस श्रेणी में रख सकते हैं। असमीया लोक साहित्य की तरह ही विद्वानों ने असमीया लोकगीतों को भी विभिन्न

श्रेणी में विभक्त किया है । प्रफुल्लदत्त गोस्वामी ने 'वर्णनात्मक मालिता, धर्मीय गीत, प्रनयमूलक गीत, कर्म गीत, निचूकनि गीत आदि खंडों में विभक्त किया है ।" [7]
हेमंत कुमार शर्मा ने लोकगीतों को मुख्यत: चार श्रेणी और कई उपश्रेणियों में भी बाँटा है [8]

i). अनुष्ठानमूलक:
   क) भक्तिनिरपेक्ष
   ख) भक्तिप्रधान या भक्तिमूलक

ii). कर्मविषयक:

iii). आख्यानमूलक या वर्णना प्रधान:
   क) बूरंजीमूलक
   ख) किंवदंती या जनश्रुतिमूलक
   ग) बारमाही और विलापगीत

iv). जूना और धेमाली गीत:

1. अनुष्ठानमूलक लोकगीत

किसी भी उत्सव-अनुष्ठान में जो गीत गाया जाता है, उसे साधारणत: अनुष्ठानमूलक लोकगीत कहा जाता है । अनुष्ठानमूलक लोकगीतों को दो भागों में बाँटा गया है –
क) भक्तिनिरपेक्ष
ख) भक्तिप्रधान या भक्तिमूलक

क) भक्तिनिरपेक्ष: भक्तिनिरपेक्ष लोकगीत ऐसे लोकगीत होते हैं, जिसे उत्सव अनुष्ठान में गाया जाता हैं किंतु उसमें भक्तिभाव की प्रधान्ता नहीं होती है । उसे ही भक्तिनिरपेक्ष लोकगीत कहा जाता है । जैसे- हूसरी, वनगीत, बिहूगीत,वियानाम, भेकुली वियार गीत (मेढ़क के गीत), महोहो गीत(मच्छर भगाने के गीत) आदि ।
ख) भक्तिप्रधान गीत: अन्य धर्मो की तरह असमीया लोकसमाज में भी भक्ति की परम्परा रही है । असमीया समाज बहुत से देवी-देवताओं की पूजा-स्तुति करते हैं । देव और देवियों की पूजा वंदना करते समय गाने वाले गीत केवल नारी समाज में ही प्रचलित है । तथा इस प्रकार के लोकगीत असमीया लोक साहित्य में अपना एक अलग ही स्थान बनाये हुए है । जैसे- आईनाम (शीतला माता), देवीर नाम, अपेचरा सवाहर गीत, मनसा देवी, शिव की स्तुति आदि ।

2. आख्यानमूलक लोकगीत

आख्यानमूलक लोकगीत असमीया लोकगीत का एक विशिष्ठ अंग है । इस प्रकार के लोकगीतों को 'मालिता, गाथा, कथा और अंग्रेजी में 'Ballad' कहा जाता है । इस प्रकार के गीत वर्णना प्रधान होते हैं । आख्यानमूलक गीतों की यह विशेषता होती है कि किसी भी कहानी, जनश्रुति आदि को गीत के माध्यम से गा कर प्रस्तुत किया जा सकता है ।
मालिता का एक उदाहरण-

"गान्धी सूता काटू,
गान्धी सूता काटू,
शालाकाठीर आर लागछि
गान्धी सूता काटू ।" [9]

आख्यानमूलक गीतों को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं–
क) बुरंजीमूलक (ऐतिहासिक)
ख) किवदंती या जनश्रुतिमूलक
ग) काल्पनिक

क) बुरंजीमूलक गीत (ऐतिहासिक): किसी ऐतिहासिक घटना या चारित्रिक आधार बनाकर जो गीतों की रचना की जाती है, उसे बुरंजीमूलक या मालिता गीत कहा जाता है। इस प्रकार के गीतों में इतिहास के वास्तविकता के साथ-साथ काल्पनिकता का भी सहारा लेकर गीतों को रचना की जाती है ।बुरंजीमूलक गीतों में बरफूकन के गीत, मणिराम दिवान के गीत, जयमती कुंवरी के गीत, गौरीनाथ सिंह के गीत आदि ।
ख) किवदंती या जनश्रुतिमूलक: किवदंती या जनश्रुतिमूलक गीतों का आश्रय लेकर असमीया लोकसमाज जिन गीतों की रचना करता है इस प्रकार के गीतों को किवदंती या जनश्रुतिमूलक गीत कहा जाता है । इस प्रकार के गीतों को किसी लोगों द्वारा सुनी या कही गयी गीत की परम्परा को लोग आगे बढाते आ रहे हैं । असमीया जनश्रुतिमूलक गीतों में मणिकुंवर गीत, फुलकुंवर गीत, जनागाभरु गीत, कमलाकुंवरी गीत आदि ।
ग) काल्पनिक गीत: साधारणत: कल्पना का आश्रय लेकर जिन गीतों की रचना की जाती है, उसे काल्पनिक गीत कहा जाता है । कल्पना के आधार पर इस प्रकार के गीतों की रचना की जाती है । जैसे – बारहमाही गीत, कन्या बारहमाही, सीता बारहमाही, राम बारहमाही, शांति बारहमाही, मधुमति के गीत, द्रौपदी विलाप के गीत, जुनागीत, यशोधरा विलाप गीत आदि ।

3. विविध विषयक गीत

विविध विषयक लोकगीतों के अंतर्गत निचूकनी गीत, नावखेलुवा गीत, गरखीया गीत, खेल-धेमाली के गीत, देहविचारर गीत, टोकारी गीत, वृंदावनी गीत, जिकिर-जारि आदि गीत आते हैं । दूसरे गीतों की तुलना में भिन्नता होते हुए भी उन गीतों का भाव रोचक है ।
खेल के गीत के एक उदाहरण-

"अ'फूल अ' फूल नुफुले किय ?
गरुवे जे आग खाय मइनो फुलिम किय ?
अ गरु अ' गरु आग खाब किय ?
गरखीयाइ ये गरु ना राखे मइनो ना खाम किय?" [10]

(अर्थात फूल से बच्चे पूछते हैं कि वे क्यों नहीं खिलते हैं, फूल कहता है गाय मुझे खा जाती है, मैं कैसे फूलूँ । फिर पशु से पूछने पर कि वह फूल क्यों खा जाता है, वह जवाब देता है कि पशुपालक मुझे ठीक से नहीं रखते तो मैं न खाउं तो क्या करुँ ।)

4. कर्मविषयक लोकगीत

असमीया लोकगीत कर्मविषयक लोकगीतों से समृद्ध है । कर्म को आधार बनाकर यहाँ के लोग कृषिजीवी समाज, कृषि के साथ जड़ित विभिन्न परिवेश, अनुष्ठान, जीवन के विभिन्न कर्म को आधार बनाकर कर्मविषयक लोकगीतों की रचना की गयी है । श्रममय लोकजीवन में धान काटते समय, शिकार करते समय, धान लगाने, हल जोतने, गाय-पशुओं को चराते समय, नाव खेवते समय, साग-सब्जी काटते समय आदि विभिन्न अवसरों पर ये गीत वास्तविक जीवन से संबंधित ये गीत श्रम को दर्शाता है ।
कर्मविषयक गीत का एक उदाहरण-

"गान्धी नामर नौका खनिये
जवहर नामर बठा,
स्वराज आनिबके लागि
हाते काटों सूता ।" [11]

(अर्थात यदि गाँधी नाम की नौका एवं जवाहर नेहरु नाम के बटा के द्वारा हमें स्वराज लाना है तो अपने हाथों से सूत कातकर आत्मनिर्भर बनना होगा ।)

निष्कर्ष

'पूर्वोत्तर भारत' असमीया और भोजपुरी लोकसाहित्य का केंद्र बिंदु लोकगीत है । भोजपुरी और असमीया समाज प्राचीन काल से ही लोकगीतों के माध्यम से ही अपने भावों का प्रकाश करते आ रही हैं। इस संगोष्ठी पत्र में हम भोजपुरी के लोकगीतों में मुख्य रुप से संस्कार, ऋतु, व्रत, श्रम और जाति से संबंधित लोकगीतों का वर्गीकरण करेंगे वहीं असमीया के लोकगीतों के वर्गीकरण में अनुष्ठानमूलक, कर्मविषयक, आख्यानमूलक और जूना आदि गीतों को देखेंगे। अत: स्पष्ट रुप से हम कह सकते हैं कि उपरोक्त वर्गीकरण संबंधित लोकगीतों का प्रचलन भोजपुरी और असमीया दोनों क्षेत्रों में रीति-नियम तथा स्थान विशेष की भिन्नता के साथ देखने को मिलता है । तथा दोनों में लोकजीवन के रस का प्रभाव इन क्षेत्रों के लोकगीतों में पाये जाते हैं। वस्तुत: हम दोनों लोकगीतों को तुलना की कसौटी पर देखें तो दोनों ही लोकगीतों में असमानता के साथ-साथ समानता भी देखने को मिल जाती हैं । जो कि आप जनमानस एवं अपनी धरोहर को एक ही माला में पिरो कर रखे हुए हैं। साथ ही पूर्वोत्तर भारत के लोकगीत भोजपुरी और असमीया से संबंधित लोकगीतों द्वारा जनमानस के एक सूत्र में बाँधने का काम कर रही है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भोजपुरी लोकगीत भाग-2, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-2011, पृ०-31,
2. भोजपुरी लोकगीत भाग-1, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-2011, पृ0-41.
3. भोजपुरी लोकगीत भाग-2, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-2011, पृ०70
4. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, शांति जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, तृतीय संस्करण वाराणसी, 1999, पृ0-466,
5. भोजपुरी लोकगीत भाग-2, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-2011, पृ०-97-98,
6. भोजपुरी लोकगीत भाग-2, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, तृतीय संस्करण, प्रयाग-2011, पृ०-36,
7. असमिया जन साहित्य, प्रफुल्लदत्त गोस्वामी, गुवाहाटी, 1998, पृ० सं-4
8. असमीया लोकगीति संचयन, हेमंत कुमार शर्मा, पृ०-12
9. लोक संस्कृति, डॉ० नवीन चन्द्र शर्मा, चन्द्र प्रकाशन, पानबजार, गुवाहाटी, 2015, पृ०-117,
10. असमिया लोक साहित्य: एक विश्लेषण, डॉ० हरेराम पाठक, गोपिका प्रकाशन, लखनऊ-21, 2008, पृ०-34,
11. असमिया लोक साहित्य: एक विश्लेषण, डॉ० हरेराम पाठक, गोपिका प्रकाशन, लखनऊ-21, 2008, पृ०-31।